International Journal of Enhanced Research in Educational Development (IJERED)
ISSN: 2320-8708, Vol. 10 Issue 6, Nov-Dec, 2022, Impact Factor: 7.326

आज के वर्तमान भारत में शिक्षा की दिशा और दशा

डॉ. पवन कुमार शर्मा

असिस्टेंट प्रोफेसर, स्कूल ऑफ एजुकेशन, मोनाड विश्वविद्यालय हापुड़, उत्तर प्रदेश

सार:-

'आज के वर्तमान भारत में हमारी शिक्षा व्यवस्था पर एक वृहत (बड़े) जनसमूह को शिक्षित करने का उत्तरदायित्व है अगर कुछ चुनौतियों की बात करें तो "सबके लिए शिक्षा" की सुविधा उपलब्ध करवाना है। तो प्रत्येक शिक्षित व्यक्ति से अपेक्षा की जानी चाहिए कि वह इस लक्ष्य प्राप्ति में अपना सहयोग प्रदान करें। **Each one Teach one** का नारा इस दिशा में सफलता दिला सकता है। पढ़ाई परीक्षा अंकों की दौड़ में चाहे- अनचाहे व्यक्तित्व विकास की बहुत सी समस्याएं अनुसुलझी रह जाती है जो कि भविष्य में निराशा ,हताशा, और कुंठा के रूप में अपराधी वर्तियों को जन्म देती है। क्या यह शिक्षा बच्चों को यह स्वतंत्रता देती है कि वह रमन, टैगोर, कलाम, कल्पना, सुनीता बन सके। शिक्षा समाज परिवर्तन का प्रेरक बल है। वहीं शिक्षा परिव्राजक है। एक बात और प्रासंगिक है कि अगर हम इस विद्या के मंदिर का कायाकल्प होने पर पुजारी नहीं बदले तो यह बदलाव अर्थहीन एवं प्रभावहीन होगा, अर्थात शिक्षक को भी 'सत्यम शिवम सुंदरम' को अंगीकृत करना होगा, क्योंकि एक इंजीनियर की गलती किसी भवन की नींव में दब सकती है, किसी डॉक्टर की गलती किसी कब्र के नीचे दब सकती है, परंतु एक शिक्षक की गलती संपूर्ण राष्ट्र में झलकती है। प्राथमिक शिक्षा हमारे शिक्षा रूपी भव्य भवन की आधारशिला है, किंतु यह आधार ही जर्जर अवस्था अवस्था में है। कमजोर आर्थिक स्थिति, राजनीति भय, अल्प शैक्षिक योग्यता आदि से त्रस्त शिक्षक गिनती, पहाड़े, अक्षर ज्ञान करवाने को ही शिक्षा मान बैठे हैं। इस स्तर पर सुधार की अत्यंत आवश्यकता है। वर्तमान आवश्कताओ के अनुरूप जब तक पाठ्यक्रम में मूलभूत बुनियादी बदलाव और परिवर्तन नहीं किए जाएंगे तब तक तो यह तस्वीर बदलने वाली नहीं है। क्या वर्तमान शिक्षा पद्धति से व्यक्तित्व विकास और देश समाज की उन्नति का लक्ष्य हासिल किया जा सकता है। आज हमें ऐसे पाठ्यक्रम की जरूरत है, जो बच्चों में मानसिक, शारीरिक ,बौद्धिक ,भावात्मक ,संवेदनशीलता और समानता को विकसित करें।'

वर्तमान भारत में शिक्षा:-

आज वर्तमान भारत में जो शिक्षा पद्धति प्रचलित है आज उसके कई पक्षों में सुधार की आवश्यकता है। हमारी शिक्षा व्यवस्था पर एक वृहत जनसमूह को शिक्षित करने का उत्तरदायित्व है। साधन और संसाधन बहुत सीमित है, परिस्थितियां भी अनुकूल नहीं फिर भी हम लक्ष्य की प्राप्ति की और प्रयत्नशील है, फिर भी हम दृढ़ संकल्प के साथ आगे बढ़ रहे हैं तो इस निराशाजनक स्थिति से उभर सकतें। अगर कुछ चुनौतियों की बात करें तो सबके लिए शिक्षा के सुविधा उपलब्ध करवाना है तो प्रत्येक शिक्षित व्यक्ति से अपेक्षा की जानी चाहिए कि वह इस लक्ष्य प्राप्ति में अपना सहयोग प्रदान करें। **Each one Teach one** का नारा इस दिशा में सफलता दिला सकता है। इसके लिए सरकारी तंत्रो के सात स्वमंसेवी और सामाजिक संगठनों को भी जोड़ना होगा। विद्यालयों में संख्यात्मक नामांकन की बढ़ोतरी की बजाय न्यूनतम अधिगम स्तर पर ध्यान दिया जाना चाहिए।

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद हमने सब के लिए शिक्षा प्राप्ति पर तो ध्यान दिया पर सबके लिए समान गुणवत्ता वाली शिक्षा का लक्ष्य अभी भी कोसो दूर है। निजी और सरकारी स्कूलों में उपलब्ध संसाधन और सुविधाओं एवं प्रदान की जा रही शिक्षा की गुणवत्ता में व्यापक अंतर मौजूद है। भारत देश में यह संभव

तो नहीं कि सबको निजी स्कूलों की जैसी सुविधाएं उपलब्ध कराई जा सके, परंतु इस दिशा में प्रयास अवश्य होना चाहिए कि सभी को समान शिक्षा के अंतर्गत अच्छी शिक्षा को कम खर्चीला कैसे बनाया जाए। अगर हम यह लक्ष्य ले कर चल रहे हैं **सबके लिये शिक्षा हो तो यह लक्ष्य परम्परागत** संस्थागत शिक्षा पद्धति से प्राप्त नहीं हो सकता। इसके लिये शिक्षा के अन्य विकल्प जनसामान्य को उपलब्ध करवाने होंगे। शिक्षा में तकनीकी का उपयोग अत्यधिक हो रहा है किंतु इन तकनीकी साधनों को शिक्षक का विकल्प न मानकर, बल्कि सहयोगी मानकर प्रयोग करने का लक्ष्य होना चाहिए। इसे मैं दुर्भाग्यपूर्ण ही मानता हूं कि शिक्षक का अधिकांश समय सूचनाओं को विद्यार्थियों तक पहुंचाने में लग जाता है, अर्थात पढ़ाने के अलावा बहुत सारे अन्य कार्य एक शिक्षक को करने होते हैं।

नये भारतीय समाज का निर्माण:-

औद्योगिक क्रांति के कारण नये भारतीय समाज का निर्माण हम देख रहे हैं, जिसमें कि कई शाश्वत मूल्यों का अवमूल्यन हो गया है। प्रतिस्पर्धा की प्रधानता, असहयोग की भावना और साध्य- साधनों की तुलना में महत्वपूर्ण हो गये है। भौतिक सम्पनता तो आई परंतु नैतिक मूल्यों के पतन की कीमत पर। मेरा मानना है कि शिक्षा ही मानवीय एवं नैतिक मूल्यों की प्रतिस्थापन का सबसे सशक्त साधन है। वर्तमान में हमारी शिक्षा भटक गई है हम कभी शिक्षा को डिग्री से जोड़ते हैं, कभी कार्य के अनुभवों से जोड़ते हैं,.... पर कभी यह नहीं सोचा कि हमारी शिक्षा का दर्शन क्या होना चाहिए। अगर वर्तमान में शिक्षा की प्रासंगिकता की बात करें तो हम जिस शिक्षा व्यवस्था को ढो रहे हैं उसमें व्यवसायिकता इतनी हावी होती जा रही है, कि जेंडर भेदभाव, महिला हिंसा, स्वास्थ्य सुरक्षा, जैसे मुद्दे अनावश्यक लगते हैं। स्कूलों में पढ़ाई का बोझ किसी को इस और सोचने के लिए समय नहीं देता, पढ़ाई परीक्षा अंकों की दौड़ में चाहे- अनचाहे व्यक्तित्व विकास की बहुत सी समस्याएं अनसुलझी रह जाती है, जो कि भविष्य में निराशा, हताशा और कुंठा के रूप में अपराधी वृतियो को जन्म देती है। क्या यह शिक्षा बच्चों को यह स्वतंत्रता देती है कि वह रमन, टैगोर, कलाम, कल्पना ,सुनीता आदि बन सके।

देश काल और परिस्थिति के अनुसार शिक्षा:-

परिवर्तन शास्वत है तो देश काल और परिस्थिति के अनुसार शिक्षा में भी परिवर्तन होना चाहिये। आज हमारी शिक्षा भी परिवर्तन के दौर से गुजर रही है। जो देश काल और परिस्थिति के अनुसार आवशयक हैं। शिक्षा, समाज परिवर्तन का प्रेरक बल है वही शिक्षक परिव्राजक है। एक बात और प्रासंगिक है कि अगर हम इस विद्या के मंदिर का कायाकल्प होने पर पुजारी नहीं बदले तो यह बदलाव अर्थहीन एवं प्रभावहीन होगा, अर्थात शिक्षक को भी 'सत्यम शिवम सुंदरम' को अंगीकृत करना होगा, क्योंकि एक इंजीनियर की गलती किसी भवन की नींव में दब सकती है, किसी डॉक्टर की गलती किसी कब्र के नीचे दब सकती है, परंतु एक शिक्षक की गलती संपूर्ण राष्ट्र में झलकती है। शिक्षा के रसातलित होते स्तर को रोकने के लिए एक प्रयास यह भी संभव है कि कृपांकों की समाप्ति, अंकों में वृद्धि करने पर रोक, विभिन्न विषयों की मौखिक परीक्षाओं की समाप्ति और परिणामों के प्रतिशत की पाबंदी से मुक्त करते है तो सुधार संभव है। वर्तमान में ज्ञान के विस्फोट में वृद्धि त्रीव गति से हुई है। किंतु इस विस्फोट की चुनौती को स्वीकार करने के लिए हमारी शिक्षा संस्थाओं के पास साधन और संसाधनों का नितांत अभाव है। प्राथमिक शिक्षा हमारे शिक्षा रूपी भव्य भवन की आधारशिला है, किंतु यह आधार ही जर्जर अवस्था में है। कमजोर आर्थिक स्थिति, राजनीति का भय, अल्प शैक्षिक योग्यता आदि से त्रस्त शिक्षक गिनती, पहाड़े, अक्षर ज्ञान, कराने को ही शिक्षा मान बैठे हैं। इस स्तर पर सुधार की अत्यंत आवश्यकता है।

शिक्षा का बाजारीकरण:-

वर्तमान में हमारे देश में शिक्षा का बाजारीकरण हुआ हैं जिस कारण शिक्षा के कथित मंदिर आनन-फानन में कुकुरमुत्ता की तरह उग गए हैं, जिसका मकसद बच्चों का भविष्य निर्माण करना नहीं बल्कि अपनी तिजोरी भरना है। लेकिन हमारी सड़ी गली राजनीतिक व्यवस्था ने बिना शिक्षक और भवन के ही पेड़ के नीचे स्कूल खुलवा दिए हैं। यहां जवाबदेही तय होनी चाहिए कि जिसने उस ऐसी संस्था को मान्यता प्रदान की है उस बोर्ड और बोर्ड में कार्यरत अधिकारियों पर कड़ी कार्रवाई होनी चाहिए।

उच्च शिक्षा:-

अगर उच्च शिक्षा की समीक्षा करें तो यह देश के लिए बड़ी ही त्रासद की स्थिति हैं कि विश्व के शीर्ष 100 विश्वविद्यालयों की सूची में भारत कहीं नहीं है, अर्थात विश्व को भारत की उच्च शिक्षा ने प्रभावित नहीं किया। इसलिये इस क्षेत्र में ऐसी दूरगामी योजनाएं बनानी होंगी जिससे कि हम गुणवत्ता का स्तर बनाते हुए संसाधन जुटा सके। आजादी के बाद देश में हम ऐसा कोई बुनियादी ढांचा विकसित नहीं कर पाए जो कि शोध और अनुसंधान को प्रोत्साहित करें। देश में वैज्ञानिक शोध और अनुसंधान की दशा बड़ी सोचनीय है। हमारे विश्वविद्यालय एम० फिल० और पीएच० डी० की सिर्फ डिग्री बांट रहे हैं। कई विश्वविद्यालयों में तो पैसे लेकर डिग्री देने का खुला खेल चल रहा है। रही सही कसर स्ववित्त पोषित कोर्स के माध्यम से डिग्री बांटकर पूरी हो गई है। महाविद्यालयों में विकास समिति के नाम पर शोषण और लूट का खेल जारी है।

शिक्षा किसी भी देश के लिए सबसे ज्यादा आवश्यक तत्वों में से एक है। एक शिक्षित समाज ही देश को उन्नत और समृद्ध बनाने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। शिक्षा विहीन समाज साक्षात पशु के समान बताया गया है। संस्कृत के महान कवि श्री भरत हरी जी ने स्पष्ट रूप से कहा भी है – "शिक्षा विहीन साक्षात पशु पुच्छ विशाणहीन:" , हमारे वैदिक मंत्रों में भी मंत्रित है - असतो मा सद्गमय, तमसो मा ज्योतिर्गमय, मृत्योर्मा अमृतं गमय, इसका अर्थ हुआ कि विद्या अथवा शिक्षा सत्य का, ज्ञान का, अमरता का कारण है। जब शिक्षा हमें अमरता प्रदान कराने में सहायक है तो एक शिक्षित समाज देश को अमर बनाने में अपनी भूमिका क्यों नहीं निभा सकता ? अब जब शिक्षित समाज की बात उठी है तो सबसे पहले शिक्षित समाज में नाम आता है देश को शिक्षित करने वाले हमारे आदरणीय शिक्षकगणों का, अब जब शिक्षकों की बात आई है तो हमें याद आती है आचार्य चाणक्य की जिन्होंने अपना शिक्षण धर्म बखूबी निभाया देश के प्रति भी और समाज के प्रति भी, ऐसे और भी इस देश में बहुत से अनुकरणीय उदाहरण है जो शिक्षकों को सम्मानीय स्थान दिलाने में विशिष्ट भूमिका निभाते हैं। परंतु आज इस देश को जिसे दुनिया जगतगुरु की उपाधि से विभूषित कर चुकी है शिक्षा के स्तर को स्तरीय स्थान दिलाने के लिए भी दो -चार होना पड़ रहा है। यह बड़े दुख का विषय है कि आज हमारे इस विशाल देश के शिक्षा स्तर में लगातार गिरावट का सामना करना पड़ रहा है। शिक्षा के सबसे आवश्यक स्तंभ विद्यार्थी, शिक्षक और पाठ्यक्रम सभी में लगातार गिरावट आ रही है। इसके लिए जिम्मेदार कौन है? सरकार ? समाज ? विद्यार्थी ?या शिक्षक? मैं कहता हूं यह सभी इसके लिए जिम्मेदार हैं।

वर्तमान शिक्षा में गुरु का स्थान:-

वर्तमान शिक्षा में गुरु या अध्यापक श्रद्धा का पात्र न होकर वेतन भोगी नौकर बन गया है। अध्यापक की भूमिका गौण हो गई है तथा विद्यालय-विश्वविद्यालय के प्रबंध तंत्र की भूमिका महत्वपूर्ण हो गई है। वर्तमान शिक्षा में अध्यापक विद्यार्थी को योग्य बनाने के दायित्व से रहित है। इसलिए शिक्षा के यांत्रिक हो जाने से डॉक्टर, इंजीनियर जैसे कल पुर्जों का निर्माण तो हो रहा है लेकिन मानव का निर्माण बाधित हो गया है। शिक्षा को स्वदेशी, भावनात्मक तथा सार्थक बनाने के लिए सबसे पहले कक्षाओं का निर्माण विषयवार हो और विषय के अनुसार कक्षाओं को सजाया जाए। छात्रों के प्रवेश में अध्यापक की भूमिका निर्णायक हो और प्रबंध तंत्र का वर्चस्व कम हो। अध्यापकों पर विद्यार्थियों को योग्य बनाने का भार हो। अध्यापकों के प्रशिक्षण एवं चयन में उनके गुण, सील ,चरित्र तथा शिक्षण कार्य के प्रति उनके समर्पण भाव का आकलन हो।

परीक्षाओं का संचालन एवं नियंत्रण:-

परीक्षाओं का संचालन एवं नियंत्रण इस प्रकार हो कि विद्यार्थी निर्भय होकर उत्साह पूर्वक मन से परीक्षा में बैठे। निजी शिक्षण संस्थाओं द्वारा किए जा रहे आर्थिक शोषण पर तो अंकुश लगना ही चाहिए। शिक्षण संस्थाओं में प्रवेश एवं नियुक्तियों के संदर्भ में राजनीतिक हस्तक्षेप समाप्त होना चाहिए। महाविद्यालयों-विश्वविद्यालयों के विद्यार्थियों एवं अध्यापकों को सक्रिय राजनीति में भाग लेने पर रोक लगे, क्योंकि इससे दोनों स्तर पर एकता एवं सद्भाव का विघटन होता है, तथा दोनों विभिन्न राजनीतिक गुटों में बटकर शैक्षणिक परिसर को राजनीति का अखाड़ा बना देते हैं, जिससे विद्यार्थियों का शैक्षणिक विकास बाधित

होता है। विद्यार्थी संघ का चुनाव तो हो लेकिन उसमें राजनीतिक गुटबाजी का प्रवेश निषेध हो। यह चुनाव पार्टी स्तर पर न होकर विद्यालय स्तर पर होने चाहिए। विद्यार्थी संघ का मुख्य कार्य विधार्थियो की समस्याओं का समाधान एवं कल्याण हो। किसी भी राजनीतिक दल के नेताओं को उच्च शिक्षण संस्थानों में अपनी विचारधारा के प्रचार की अनुमति न हो। सभी जातियों, संप्रदायों के विद्यार्थियों को सभी स्तर पर शिक्षा का समान अधिकार एवं अवसर प्राप्त हो। वर्तमान शिक्षा में यदि यह परिवर्तन किए जा सके तो संभव है कि विद्यार्थियों के भटकाव पर काफी हद तक लगाम लग जाए। यह बदलाव छात्रों में योग्यता का विकास करने में भी सहायक सिद्ध होंगे। इसके परिणाम स्वरूप उत्पादक प्रतिभा एवं मानवीय चरित्र से युक्त युवा उत्तम नागरिक बनकर परिवार को, समाज को सुख, समृद्धि एवं राष्ट्र को शांति प्रदान कर सकेंगे।

पाठ्यक्रम:-

वर्तमान आवश्यकताओं के अनुरूप जब तक पाठ्यक्रम में मूलभूत बुनियादी बदलाव और परिवर्तन नहीं किए जाएंगे, तब तक तो यह तस्वीर बदलने वाली नहीं है। क्या वर्तमान शिक्षा पद्धति से व्यक्तित्व विकास और देश, समाज की उन्नति का लक्ष्य हासिल किया जा सकता है। आज हमें ऐसे पाठ्यक्रम की जरूरत है जो बच्चों में मानसिक, शारीरिक, बौद्धिक, भावात्मक, संवेदनशीलता और समानता को विकसित करें। जल, जमीन, जंगल एवं जानवरों के महत्व का ज्ञान कराने वाले पाठ्यक्रम का निर्माण हो। मानवीय चरित्र निर्माण के लिए आवश्यक पाठ्यक्रम का विकास हो। साथ ही अपने राष्ट्र, संस्कृति, भाषा – भूषा, आहार, व्यवहार के प्रति स्वाभिमान एवं गौरव के भाव का विकास का ज्ञान कराने वाले पाठ्यक्रम का निर्माण हो। इसके अलावा प्राथमिक एवं माध्यमिक स्तर पर किताबों का बोझ कम हो और डिग्री - सर्टिफिकेट से अधिक योग्यता के विकास को महत्व दिया जाना चाहिए।

शिक्षा व्यवस्था:-

एक ऐसी शिक्षा व्यवस्था की जरूरत है जो युवाओं में नागरिक जिम्मेदारी, राष्ट्रप्रेम, आलोचनात्मक और निर्णय क्षमता को प्रोत्साहित करें और परिस्थितियों के अनुसार समस्याओं से लड़ने की क्षमता प्रदान करें। यहां यह भी जरूरी है कि व्यवहारिक ज्ञान और नैतिकता के साथ बुनियादी प्रशिक्षण भी आवश्यक है, जो कि विद्यार्थियों में जीविकोपार्जन की क्षमता उत्पन्न कर सके। अगर देश के विकास के लिए, देश के विकास के परिपेक्ष्य में बात करें तो 3 घंटे की परीक्षा प्रणाली से किताबी ज्ञान का बेहतरीन परिचय देने वाले युवाओं के साथ हमें युवा उद्यमी, वैज्ञानिक, अविष्कारक और स्वालंबन के आधार पर रोजगार उत्पन्न करने वाली युवा शक्ति की आवश्यकता है। अंत में मैं यही कहूंगा कि यह हमारा दुर्भाग्य है कि हम आज भी मैकाले की शिक्षा व्यवस्था के औपनिवेशिक ढांचे के गुलाम बनकर ही चल रहे हैं। देश में एक खराब प्रथा और चल पड़ी है कि जो भी दल सत्ता में आता है वह अपने हिसाब से पाठय-पुस्तकों का निर्माण करवाता है और शिक्षा के माध्यम से अपनी राजनीतिक विचारधारा को आरोपित कर उन्हें भविष्य के वोट बैंक के रूप में देखता है। यह आज आजाद भारत की एक कड़वी सच्चाई है।

शिक्षणेत्तर कार्य:-

सरकारी योजनाओं में शिक्षणेत्तर कार्यों की लंबी फेहरिस्त है.. मसलन ऐसे कार्य जो एक शिक्षक को शिक्षण से अलग करने होते हैं जैसे जनगणना, आर्थिक गणना ,स्वास्थ्य परीक्षण, हाउस होल्ड सर्वे,(बाल गणना), वोटर लिस्ट पुनरीक्षण (बीएलओ), पशु गणना, आधार कार्ड कैंप, पिछड़ी जाति गणना, छात्रवृत्ति का खाता खुलवाने की ड्यूटी, प्लस पोलियो की ड्यूटी, भवन निर्माण, निर्वाचन में ड्यूटी यह विद्यालय से इतर है और मिड डे मील ,गैस सिलेंडर मंगाने की जिम्मेदारी ,ड्रेस वितरण(बिना वजट आये दुकान वालों से उधार मांग कर कपड़े वितरण का आदेश),रंगाई, पुताई, फर्नीचर , पाठय-पुस्तक वितरण व उक्त के अभिलेख सुरक्षित रखने की जिम्मेदारी इन कार्यों के लिए कोई यात्रा भत्ता भी नहीं है। सरकारी शिक्षा के ऐसे परिपेक्ष्य में अगर कुछ कर्मठ शिक्षक है तो कुछ कामचोर अध्यापक/ अध्यापिकाओं की एक निरंतर बड़ी होती फौज भी है, जो शिक्षणेत्तर सेवाएं देकर काम चोरी करते हैं। सावधान ! यह शिक्षा प्रणाली

हमारे बच्चों का बचपना और युवाओं की तरुणाई छीन रही है और पूरी की पूरी पीढ़ी को कुंठित बना रही है।

डॉक्टर कलाम जी ने अपनी पुस्तक में लिखा है कि उनके घर में एक कैलेंडर लगा था जो जर्मनी में छपा था। सभी देखने वाले जर्मनी की प्रशंसा करते हुए कहते थे कि चित्र बहुत ही सुंदर है। कलाम साहब सभी देखने और पढ़ने वालो को कहते थे कि नीचे छोटे अक्षरों में भी कुछ लिखा है, यह भी पढ़ो, पड़ने पर लोग कहते थे क्या यह भारतीयों द्वारा लिए गए चित्र हैं ? इस प्रकार आज अपने देश में अंग्रेजी में बोलने वालों को विद्वान माना जाता है और अपनी भाषा में बोलने वाले को हीन दृष्टि से देखा जाता है।

देश की समस्याओं का समाधान केवल शिक्षा से ही संभव है। विद्यार्थियों को पानी का दुरुपयोग, बिजली का दुरुपयोग रोकने की शिक्षा दें। छोटी-छोटी बातों के माध्यम से बच्चों को व्यवहारिक शिक्षा दी जा सकती है। कक्षा में सामाजिक- राष्ट्रीय दृष्टिकोण देने की भी आवश्यकता है। केवल 40 मिनट का भाषण पर्याप्त नहीं है, कक्षा में सामाजिक परिवर्तन के प्रयोग करना भी आवश्यक है।

शिक्षा में परिवर्तन:-

शिक्षा में परिवर्तन यह ईश्वरीय कार्य है। यदि देश का पुनः उत्थान करना है, इसे पुनः जगद्गुरु बनाना है तो प्रथम शिक्षा में परिवर्तन आवश्यक है। मैकाले को मालूम था कि शिक्षा को बदले बिना भारत में शासन करना कठिन है। इसलिए उसने सबसे पहले शिक्षा को बदला। संस्कृत के स्थान पर अंग्रेजी विद्यालय खोले। उसने अपने पिता को पत्र लिखा कि भारतीय शिक्षा व्यवस्था को बदलने पर उन्हें अत्यंत खुशी है। लेकिन सही सफलता तब मानी जाएंगी जब हम यहां नहीं रहेंगे परंतु यह शिक्षा व्यवस्था यहां चलती रहेंगी। इस शिक्षा को प्राप्त करने वाले देखने में तो भारतीय होंगे लेकिन आचार ,व्यवहार, विचार से अभारतीय होंगे। वर्तमान में शिक्षा में परिवर्तन यह प्रथम आवश्यकता है। शिक्षक के रूप में हमारा दायित्व इस परिवर्तन के लिए अधिक है। हम शिक्षा में परिवर्तन की दिशा में चिंतन और विचार करें, यही आपसे मेरी प्रार्थना है।

सारांश:-

सारांश यही है कि हमारी शिक्षा केवल काम चलाओ वस्तु ना हो, वह केवल परीक्षा पास करने का माध्यम ना हो, वरन हमें भली प्रकार जीना सिखाए ,विद्या वही है जो हमें इस दुनिया की चिंता से मुक्त करके हमारी जीवन नैया को भव सागर से पार लगाने में समर्थ हो- 'स विद्या या विमुक्तये'।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. मिश्र, अमरेश, आधुनिक शिक्षा का स्वरूप, मिश्रा बुक डिपो इलाहाबाद, 2012.
2. वेदालंकार, सत्यकाम, शिक्षा सिद्धांत और समस्याएं, राष्ट्रवाणी प्रकाशन दिल्ली, 2020.
3. शारदा, जितेंद्र ,शिक्षा की समस्याएं, श्री गणेश प्रकाशन, दिल्ली, 2020.
4. पचौरी, महावीर, भारत में आधुनिक शिक्षा, रजत प्रकाशन, नई दिल्ली, 2011.
5. प्रसाद, राजेंद्र, भारतीय शिक्षा, प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली, 2011.
6. पाण्डेय, बृजेश कुमार, उच्च शिक्षा का परिदृश्य, भारती पब्लिशर्स एंड डिसटीब्यूटर्स, फैजाबाद, 2021.
7. वैश्य ,एल० पी०, उच्च शिक्षा दशा व दिशा, विश्व भारती पब्लिकेशन, नई दिल्ली, 2005.
8. धनकर, से०रोहित, भादू, राजाराम, शिक्षा के संदर्भ और विकल्प, आधार प्रकाशन, पंचकूला, 2011.
9. पाण्डेय, राम सकल, शिक्षा वर्तमान संदर्भ में, विकल्प प्रकाशन, इलाहाबाद 2021.
10. लिविंगस्टन, रिचर्ड, शिक्षा की समस्याएं, अनामिका पब्लिशर्स एंड डिसटीब्यूटर्स प्राइवेट लिमिटेड, नई दिल्ली ,2012

11. पाठक,आर० पी०, प्राचीन भारत में उच्च शिक्षा ,कनिष्क पब्लिशर्स, नई दिल्ली, 2021.
12. महतो, बाल्मीकि, शिक्षा समानता और समाज, आधार प्रकाशन पंचकूला 2012.
13. डॉ0 अरुणा गुप्ता, समकालीन भारत और शिक्षा,(2017), ठाकुर पब्लिशर्स लखनऊ.
14. प्रोफेसर रमन बिहारी लाल, डॉक्टर कृष्णा कांत, (2020), 'मध्यकालीन भारत और शिक्षा',आर. लाल. पब्लिशर्स मेरठ.